काशी

विष्णु कांत तिवारी

शंभो के त्रिशूल पर विराजती है काशी
विंध्य पर्वत क्षेत्र पर निवासती है काशी
पुराणों के पन्नों को संवारती है काशी
इतिहास के तीनों काल को दर्शाती है काशी...।।
बाबा विश्वनाथ की नगरी कहलाती हैं काशी
मां अन्नपूर्णा के कृपा से प्रसाद खिलती है काशी
रोज हजारों अजनबियों से मिलाती है काशी
उन सबसे हर हर महादेव करवाती है काशी...।।
अपने चरणों को गंगाजल से धुलाती है काशी
गंगा घाट से खुद की शोभा बढ़ाती है काशी
गंगा में पुण्य की डुबकी लगवाती है काशी
चिता के भस्म से रोज रोज नहाती है काशी...।।
अपने सुंदरता से सबको रिझाती है काशी
हजारों मंदिरों का दर्शन कराती है काशी
ॐ नम:शिवाय का जाप कराती हैं काशी
मृत्यु के समय पापो से मुक्ति दिलाती है काशी...।।
ऋचा के गान की सरिता बहाती है काशी
वेद साहित्य कला संगीत सिखाती हैं काशी
सर्वविद्या की राजधानी कहलाती हैं काशी
जीवन जीने की सत्यपथ दिखाती हैं काशी...।।
धर्म के ध्वजा को हमेशा फहराती है काशी
हर गली में विद्वानों को बसाती है काशी
अमीर गरीब सबको शरण दिलाती हैं काशी
अपने धरोहर से सबको गले लगाती है काशी...।।
नींबू वाली सस्ती चाय पिलाती है काशी
घाटों वाली महंगी सुकून दिलाती हैं काशी
यहां के लोगों का भौकाल बनाती हैं काशी
यूं ही नहीं सबके दिलो में बस जाती हैं काशी

ISSN:2583-8849